DSSSB PRT, TGT & PGT

Part(A+B)

SCHOLAR BATCH

हिन्दी

कारक

Part -2

LIVE 09-04-2024 09:00 AM

⑤- अपादान कारक ⇒ संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से दूर होने, निकलने, डरने, तुलना करने, रक्षा करने का बोध होता है, उसे अपादान कारक कहते हैं।

↳ अलग

विभक्ति - (से) अलग

उदा. बच्चा साँप से डरता है।
वह मुम्बई से आया है।
वृक्षों से पत्ते गिरते हैं।
आपने मुझे डूबने से बचाया।
वह रेलगाड़ी से नीचे उतरा।
राम सीता से सुन्दर है।
सांप बिल से बाहर निकला।

⑥- सम्बन्ध कारक ⇒ जिस संज्ञा अथवा सर्वनाम से एक वस्तु का सम्बन्ध किसी दूसरी वस्तु से जाना जाए उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं।

विभक्ति - का, की, के, रा, री, रे

उदा० वह मेरे दोस्त का चाचा है।
यह मोहन की पतंग है।
यह जयशंकर प्रसाद की कहानी है।
दशरथ के चार पुत्र थे।
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटक श्रेष्ठ हैं।
बस की गति तीव्र है।
सुनीता मेरी बहन है।

⑦ अधिकरण कारक – संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया का आधार
↳आधार सूचित होता है। उसे अधिकरण कारक कहते हैं

विभक्ति – में, पर

उदा० पानी में मछलियाँ हैं।
चिड़िया डाल पर बैठी है।
परीक्षा जुलाई में होगी।
वह अगले साल आयेगा।
मैं तीन मिनट में आ रहा हूँ।
अमित छात्रावास में रह रहा है।

मेज पर किताब रखी है।
चारपाई पर दादा जी बैठे हैं।
महाभारत का युद्ध कुरुक्षेत्र में हुआ था।
लड़के दरवाजे-दरवाजे घूम रहे हैं।
वह दिन में आयेगा।
गाड़ी दस बजे छूटती है।

⑧- सम्बोधन कारक ⇒ संज्ञा के जिस रूप से किसी को पुकारा जाए उसे सम्बोधन कारक कहते है।

विभक्ति - हे! ओ! अरे! अजी!

उदा॰ हे ईश्वर! मेरी रक्षा करो।

अरे मूर्ख! संभल जा।

अजी! सुनते हो।

ओ लड़को! खेलना बन्द करो।